ब्रजेश कुमार

पिता–श्री अर्जून सिंह, ग्राम–कोरैय, प्रखण्ड–गढ़पुरा, जिला–बेगूसराय, बिहार

''अंधेरा घना है, परन्तु
किसने कहा कि चिराग जलाना मना है''

बेगूसराय के एक साधारण किसान श्री अर्जून सिंह के एक मात्र संतान श्री ब्रजेश कुमार कुमार, ISM Dhanbad से Diploma in Electronics and Telecommunication की पढ़ाई 2009 में पूरी करने के पश्चात् Embeded System का Course, HTC New Delhi से किया।

ग्रामीण परवरिस के कारण शहरी चकाचौंध इन्हें आकर्षित नहीं कर सका। नौकरी का अनुभव इन्होंने चैतन्य गुरूकुल ट्रस्ट, चमनपुरा, गोपालगंज, बिहार में दो वर्षों तक कार्य कर प्राप्त किया। अपनी धुन के पक्के ब्रजेश को नौकरी कहाँ रास आने वाली थीं, सो इन्होंने इसे त्याग कर अपनी जन्मभूमि में ही रच–बस जाने का फैसला किया। परम्परागत तरीके के कृषि कार्य में इन्होंने आधुनिकीकरण एवं Automation को जोड़ने की दिशा में एक पहल किया है।

सबसे पहले इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट को अपनाया। वर्ष 2012 में 10 पिट से शुरू कर आज 60 पिट तक पहुँच चुके हैं और लगभग 2000 क्वींटल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन प्रतिवर्ष कर रहे हैं।

वर्मी कम्पोस्ट के लिए गोबर की उपलब्धता को ध्यानगत करते हुए इन्होंने बिहार सरकार की ''समग्र गव्य विकास योजना'' को अपनाया। भारतीय स्टेट बैंक, गढ़पुरा एवं गव्य विकास विभाग के सहयोग से आज इनके पास 20 से अधिक गायें हैं। इनका सपना गायों की संख्या 100 से ज्यादा करने की है। यहाँ पारिवारिक विषमताओं से रू–ब–रू होते हुए इन्होंने अपने मित्र कौशल कुमार के जमीन को लीज पर लेकर हरा चारा उत्पादन करना प्रारंभ किया। आज लगभग 3 एकड़ भू–भाग पर उन्नत प्रभेद के हरा चारा का उत्पादन कर अपने स्वयं के उपयोग में

लाया जा रहा है। इनकी योजना हरा–चारा व्यवसाय को प्रोत्साहित एवं स्थापित करने की भी है।

गोबर गैस प्लान्ट के द्वारा इन्होंने अपनी उर्जा खपत का एक बड़ा भाग प्राप्त किया है तथा अपनी गौशाला को इससे रौशन करने का भी इनका इरादा है।

गौशाला एवं वर्मी कम्पोस्ट के पानी के लिए इन्होंने स्प्रींकलर सिस्टम को अपनाया है। दूध दोहन में आधुनिकता को समावेश करने हेतु इन्होंने Milking Machine का सहारा लिया है। और आज प्रतिदिन लगभग 200 लीटर दूध का उत्पादन Milking Machine के माध्यम से किया जा रहा है।

स्थानीय लोगों को एक पढ़ा–लिखा युवक को कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों में कार्य करना अच्छा नहीं लगा और लोगों ने इन्हें कई तरह से हतोत्साहित किया।

अपने यहाँ इन्होंने सुदूर क्षेत्र के व्यक्तियों को कार्य पर रखना ज्यादा श्रेयस्कर समझा और आज इससे काफी खुश भी हैं।

ब्रजेश की मंशा खुद की विकास के साथ–साथ समाज की तरक्की भी है। सो इन्होंने 'आदर्श किसान सेवा केन्द्र' को भी स्थापित किया है जहाँ किसान इन्टरनेट के माध्यम से भी अपनी समस्याओं के समाधान तलाशते हैं। सेवा केन्द्र के माध्यम से ये उन्नत प्रभेद के चारा बीज, टीकाकरण, बिमारियों के संबध में जानकारियाँ, कृत्रिम गर्भाधान आदि की भी सुविधाएँ भी इनके द्वारा स्थानीय किसानों को दिया जा रहा है।

बिहार में हसनपुर चिनी मिल एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान है, जहाँ के पदाधिकारी इनके वर्मी उत्पाद को अपने किसानों तक पहुँचाते हैं। इनका वर्मी कम्पोस्ट गाजीपुर, उत्तर प्रदेश तक पहुँच गया है।

ब्रजेश का मानना है कि न सिर्फ हम, बल्कि हमारे छोटे–छोटे बच्चों को भी कृषि संबंधी जानकारी होनी चाहिए, सो इन्होंने अनेक विद्यालय संचलकों, शिक्षाविदों से सम्पर्क किया। आज तक लगभग 250 स्कूली बच्चे इनके फार्म गतिविधियों से

अवगत हो चुके हैं। इन्हीं बच्चों से वे 'कृषि उद्योगपति' की अवधारणा को पाल रखे हैं। जो आगे चलकर एक वृहत श्रृंखला का अंग बन सके।

26 सितम्बर 2014 को एक सेमीनार किया जिसका विषय था मानव विकास में कृषि एवं पशुपालन की भूमिका, जिसमें मंच से डाइट प्रधानाचार्य श्री जी शंकर, श्री ओम प्रकाश गुप्ता, गव्य तकनीकी पदाधिकारी, बरौनी डेयरी एम.डी. भीम शंकर मनुवंश जी, रिभर वेली स्कूल संचालक, आर.'एन. सिंह,, भी.पी. हसनपुर मील, शंभु राय, एवं डॉ0 अनिरूद्ध प्रसाद, डॉ0 राम ना0 सिंह आदि एवं 500 किसान जिन्होंने इस सेमिनार का फायदा लिया।

स्थानीय प्रशासन खासकर जिला पशुपालन एवं गव्य विकास विभाग का सहयोग इन्हें भरपुर मिला है। अपनी इस मुकाम में ये श्री ओम प्रकाश गुप्ता, गव्य तकनीकी पदाधिकारी, बेगूसराय का सहयोग एवं मार्गदर्शन को अहम मानते हैं। तथा लगातार उनसे आग्रह करते हैं कि जैसा Support आपने हमें दिया है वैसा या उससे भी ज्यादा अन्य युवकों को दें जिससे की इस धारणा को समाप्त किया जा सके कि कृषि संबंधी कार्य सिर्फ अनपढ़ एवं अंगूठामार लोगों के लिए है।

सेमिनार

WORK
IS